

छुआछूत, जातिवाद – एक मानवीय अपराध

Chuachut, Jativad – Ek Manaviya Apradh

प्रस्तावना: भारत में छुआछूत को सामाजिक अपराध कहा जाता है। पर वास्तव में यदि इसे मानवीय अपराध का नाम दिया जाये तो कुछ गलत न होगा। ईश्वर ने या प्रकृति ने इस संसार की रचना की है। उसने सबको बराबर बनाया। प्रत्येक को सूर्य की रोशनी दी, हवा दी, जीवन निर्वाह के लिए खान-पान के साधन दिये। जलवायु के कारण इन्सान का रंग, कद, तथा शारीरिक बनावट में भिन्नता हुई-कोई ऊंचे कुल में जन्मा, कोई गरीब और मेहनतकश, दस्तकार घर-परिवार में। ऊंचे और नीचे कुल के, गरीब और अमीर घर में, काला और गोरा रंग लेकर जन्म लेने का इसमें अपना तो कोई दोष नहीं। फिर इन्सान या इन्सान के साथ भेदभाव क्यों?

भारत में छुआछूत विरोधी प्रयास- भारत के राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने छुआछूत को रोकने के लिए महत्वपूर्ण प्रयास किये। इन्सान द्वारा इन्सान के भेद से अर्थात् अंग्रेजों की रंगभेद नीति से आन्दोलित होकर उन्होंने अंग्रेजों को भारत की धरती से भगाने का संकल्प लिया। इसके लिए उन्होंने अंग्रेजों के विरुद्ध सत्याग्रह आन्दोलन चलाया। अपने प्रयास में सफल होकर देश को आजादी दिलायी।

ऐसे गांधी के देश में, मनुष्य द्वारा मनुष्य के भेद, अर्थात् छुआछूत को यदि अपराध नहीं कहा जाये तो और क्या कहा जाएगा। यदि मनुष्य-मनुष्य में ही भेद होता रहता तो देश की एकता टुकड़ों में विभाजित हो जाती। ऐसे में कोई भी देश हम पर अपना अधिपत्य स्थापित करना चाहता। हमें एक बार फिर गुलामी की जंजीरों में कैद होना पड़ जाता।

इस बात को ध्यान में रखकर हमारे देश के अनेक राजनेताओं, समाजसुधारकों एवं महापुरुषों ने छुआछूत प्रथा को समाप्त करने के लिए अपने हर सम्भव प्रयास किये। जिसमें उन्हें सफलता भी प्राप्त हुई। कानून द्वारा छुआछूत को एक सामाजिक अपराध माना गया। इसके लिए कठोर बनाया गया जो यह प्रस्तावित करता है कि जो व्यक्ति इस प्रकार के अपराध करेगा तथा उन्हें फेलायेगा, उसे कानूनी दण्ड दिया जायेगा। कानून बन

जाने से इस पर बहुत कुछ अमल हुआ। व्यावहारिक रूप से छुआछूत प्रथा समाज से मिट गयी।

बावजूद इसके आज भी हमारे देश में कुछ नगर, गांवो, एंव बस्ती ऐसी है जिसमें छुआछूत समस्या आज भी मौजूद है। गांव के उंची जाति के लोग नीची जाति वालों को अपने बराबर में बैठने नहीं देते। अब आवश्यकता इस बात की है इसे पूरे देश में लोगों के दिलों और मन से निकाला जायें। इस दिशा में प्रयास आवश्यक हैं। आगे के प्रयासों पर विचार करने से पूर्व यह देखना जरूरी है कि कुप्रथा को मिटाने में अब तक किस ढंग से कार्य किये गये है। इसके बाद ही इस बात पर विचार किया जा सकता है कि प्रयासों को किस दिशा में आगे बढ़ाया जाना चाहिये।

छुआछूत को रोकने के लिये किये गये प्रयास- छुआछूत जैसी भयानक समस्या को रोकने के लिए समय-समय पर अनेक महापुरुषों द्वारा हर सम्भव प्रयास किये गये। महात्मा गांधी ने छुआछूत से होने वाले दुष्परिणामों को गहराई से समझा। उन्हें प्रतीत हुआ कि यदि इस समस्या को जड़ से खत्म न किया गया तो यह हमारे देश की एकता और अखण्डता को अपने जाल में फेलाकर समाप्त कर देगी।

उन्होंने दलित जाति वालों को उच्च जाति के साथ खड़ा कर इनमें असमानता की भावना को खत्म किया। उनके मन में असम विश्वास पैदा कर उच्च जाति के साथ खान-पान का एक स्वस्थ एंव प्रभावी माहौल बनाया।

(1) हरिजनों को मन्दिरों में प्रवेश की अनुमति- भारत के स्वतंत्र की लहर उठने से पहले उच्चजाति वाले नीची जाति एंव पछिड़ी जातियों को मन्दिरों में प्रवेश करने की अनुमति नहीं देते थे। हरिजन भगवान के दर्शन के लिए मन्दिर में जाने को तरसते थे। उन्हें मन्दिर में जाने से रोक दिया जाता था। उन पर अत्याचार किये जाते थे।

स्वतंत्रता के बाद स्थिति बदला, आज हरिजनों को भी उच्च जाति जैसा दर्जा प्राप्त है। वे आज मन्दिर में जाकर भगवान की पूजा अर्चना कर सकते हैं। इसका उन्हें काश्ती अधिकार प्राप्त है।

(2) संविधान निर्माताओं द्वारा किये गये प्रयास- छुआछूत को रोकने के लिए देश के संविधान निर्माताओं द्वारा महत्वपूर्ण प्रयास किये गये हैं। देश में ऐसे कानून की व्यवस्था की गयी जिसमें छुआछूत को एक सामाजिक अपराध माना गया। संविधान में कहा गया है कि जो व्यक्ति इस प्रकार की समस्या उत्पन्न करेगा उसे दण्ड दिया जायेगा।

आज दलित वर्गों को भी ऊंची पोस्टों पर नौकरियां दी जा रही हैं। दलित बच्चों को स्कूल से मुफ्त किताब, कापी एवं छात्रवृत्ति प्रदान की जा रही है। जो देश के लिए समानता, स्वतंत्रता के अधिकार में आता है।

(3) खाने-पीने में समानता का प्रयास- महापुरुषों द्वारा रंगभेद, जाति धर्म को समाप्त करने के लिए खाने-पीने में समानता का प्रयास किया गया। सभी वर्गों को एक साथ खाने-पीने, बैठने एवं कहीं भी आने-जाने की पूरी छूट दी गयी। कोई भी दलित वर्ग का व्यक्ति, हरिजन व निर्धन बड़े-बड़े होटलों एवं रेस्टोरेन्ट में जाकर खा-पी सकता है। उसमें किसी भी प्रकार का भेद नहीं किया जायेगा।

(4) स्कूलों में प्रवेश की अनुमति- आजादी से पहले देश में उच्च जातियों के बच्चों के पढ़ने के स्कूल एवं कॉलेज अलग थे, नीचे एवं दलित जातियों के अलग। परन्तु आज सभी कॉलेज समान हैं। सभी स्कूल एवं कॉलेजों में उच्च एवं दलित, काले एवं मोटे प्रकार के बच्चों को समान रूप से शिक्षा प्रदान की जाती है।

आज हरिजनों को स्कूल एवं कॉलेजों में प्रवेश सरलता से मिल जाता है तथा उनकी फीस भी माफ कर दी जाती है। उन्हें विद्यालय से मुफ्त किताबें एवं कॉपियों की सुविधाएं उपलब्ध करायी जाती हैं।

मनोरंजन करने में समानता का प्रयास- कानून द्वारा सभी वर्गों को एक साथ मनोरंजन करने का अधिकार दिया गया है। आज कोई भी हरिजन किसी भी उच्च जाति के बराबर में बैठकर सिनेमा हॉलों में फिल्म देख सकता है।

कोई भी पिछड़ी एवं दलित जाति का व्यक्ति किसी के भी साथ खेलकूद प्रतियोगिता में भाग ले सकता है। कोई भी काला व्यक्ति किसी गोरे व्यक्ति के

साथ, स्वीमिंग पूल या नदी-तालाबों में नहा सकता है। इस प्रकार के परिवेश ने भी छुआछूत की समस्या को समाप्त करने में योगदान दिया।

छुआछूत की समस्या को रोकने के उपाय- इस समस्या को रोकने के लिए सरकार एवं समाज को निम्नलिखित उपाय करने चाहिये।

(1) सामूहिक सहभोज के कार्यक्रम- समाज को जागरूक होकर विभिन्न शहरों में प्रतिवर्ष सामूहिक सहभोज के कार्यक्रम प्रारम्भ करने चाहिये। इन कार्यक्रमों में उच्च जाति वाले, प्रतिष्ठित तथा गणमान व्यक्तियों के साथ दलित एवं पिछड़ी जाति वाले व्यक्तियों को भी आतन्त्रित करना चाहिये।

(2) हरिजन बस्तियों में धार्मिक एवं सांसारिक कार्यक्रमों का आयोजन- समाज के जागरूक लोगों को बड़े-बड़े साधु एवं सन्तों को हरिजन बस्ती में बुलाकर धार्मिक कार्यक्रमों का आयोजन करवाना चाहिये। इस प्रकार क कार्यक्रम मनुष्य की आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक चेतना को जगाने में कारगर सिद्ध हो सकता है।

(3) हरिजनों के विकास के लिए प्रयत्न- सरकार द्वारा हरिजनों के विकास के लिए हर सम्भव प्रयास किये जाने चाहिये। हरिजन बस्तियों में स्कूल कॉलेज, मन्दिरों, प्रशिक्षण केन्द्रों, सांस्कृतिक कार्यक्रमों के केन्द्रों, सभी प्रकार की वस्तुओं ले मार्केट स्थापित करने चाहिये।

उपसंहार- यदि हम दिशा में पूरी तरह इस समस्या के बारे में विचार करके उपरोक्त उपाय करें तो वह दिन दूर नहीं कि इस मानवीय कोढ़ से छुटकारा पाया जा सकता है।